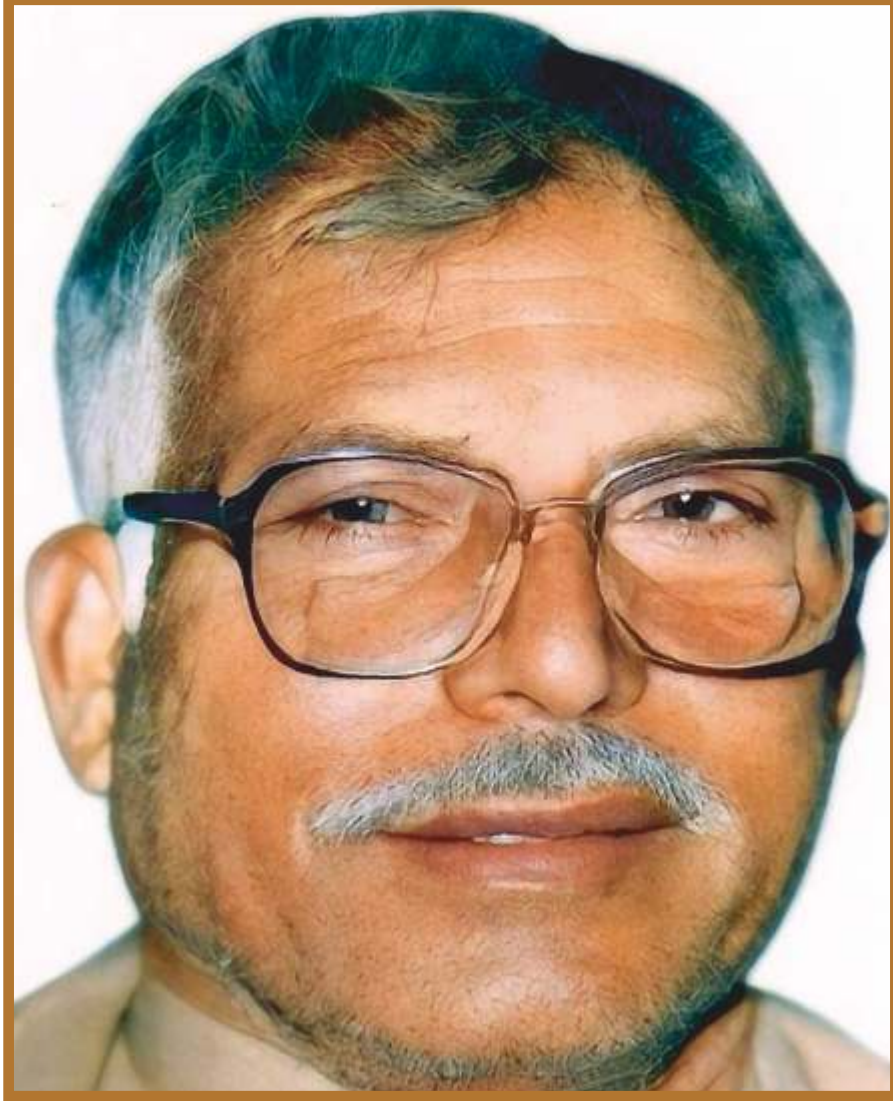


**भारत रत्न**  
***Bharat Ratna***



**श्री कर्पूरी ठाकुर (मरणोपरांत)**  
**Shri Karpoori Thakur (Posthumous)**

# श्री कर्पूरी ठाकुर (मरणोपरांत)

श्री कर्पूरी ठाकुर एक स्वतंत्रता सेनानी, दूरदर्शी राजनेता तथा किसानों, महिलाओं और समाज के वंचित वर्गों के हितैषी थे। जनहित के कार्यों के कारण जनमानस उन्हें 'जननायक' कह कर पुकारती है। उनका जीवन लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने और भारत के संविधान में निहित स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के सिद्धांतों को व्यवहार में उतारने के अथक प्रयास की मिसाल है।

2. श्री ठाकुर का जन्म 24 जनवरी 1924 को बिहार के दरभंगा (समस्तीपुर) जिले के पीतौंझिया (अब कर्पूरी ग्राम) में विदेशी शासन वाले भारत के जातिग्रस्त समाज में एक सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक रूप से पिछड़े परिवार में हुआ। श्री ठाकुर ने स्कूल जाने का संकल्प किया। वह जमींदारों की विशाल हवेलियों के बाहर तपती धूप में खड़े रहते और उन्होंने हवेली के अंदर सुविधाप्राप्त बच्चों को पढ़ाए जा रहे पाठों को सुनकर पाठ्य पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त किया। वह उस समय दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले कुछ लोगों में से थे। सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हुए, उन्होंने प्रतिष्ठित सीएम कॉलेज में दाखिला पाया। इंटरमीडिएट करने के बाद उन्होंने स्नातक की पढ़ाई जारी रखी।

3. श्री ठाकुर ने स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित होकर 14 वर्ष की अल्पायु में नवयुवक संघ का गठन किया और स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में कृषक आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और 1943 में गिरफ्तार कर लिए गए। उन्होंने 1945 में जेल से रिहा होने के बाद भी ब्रिटिश राज के विरुद्ध और भूमिहीन किसानों के हित में अहिंसक संघर्ष जारी रखा। वह 1948 में आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में गठित सोशलिस्ट पार्टी के प्रांतीय मंत्री चुने गए और हिंद किसान पंचायत की केंद्रीय समिति के सदस्य भी बने। वह 1952 में सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार के रूप में स्वतंत्र भारत के पहले चुनाव में विजयी हुए। 1957 और 1962 के चुनाव जीतकर उन्होंने विधानसभा में ताजपुर विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने बिहार विधानसभा में भूमिहीन किसानों की दुर्दशा के विरुद्ध आवाज उठाई और अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों पर लगातार हो रहे जाति-आधारित उत्पीड़न की निंदा की। वह 1967 में बिहार के उप-मुख्यमंत्री बने और शिक्षा एवं वित्त मंत्रालयों का प्रभार संभाला। उन्होंने गरीबों की मदद के लिए प्राथमिक शिक्षा को निशुल्क कर दिया तथा शिक्षा को समावेशी और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए 10वीं परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु अंग्रेजी में उत्तीर्ण होने की अनिवार्यता समाप्त कर दी। उन्होंने 7 एकड़ तक की भूमि जोत पर भू-राजस्व से छूट प्रदान की।

4. श्री ठाकुर ने 22 दिसंबर 1970 को बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में पदग्रहण करने के बाद, सरकार को जनता तक पहुंचाने और बेहतर जन कल्याण के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण सुधार लागू किया। उन्होंने हिंदी को राजभाषा बनाया और वृद्धावस्था पेंशन शुरू की। पारदर्शिता बढ़ाने के उद्देश्य से, उन्होंने इंजीनियरों और डॉक्टरों की नियुक्ति प्रक्रिया में सुधार किया, और उनके नियुक्ति-पत्र सार्वजनिक मंच से वितरित किए। उनके द्वारा किए गए भूमि सुधारों से सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। उन्होंने छोटे किसानों का भू-राजस्व बकाया माफ कर दिया और भूमि पर अधिभार को समाप्त किया।

5. श्री ठाकुर विधान सभा के सभी चुनाव जीतते रहे। हालांकि, उन्होंने जयप्रकाश नारायण के नाम से लोकप्रिय जन आंदोलन जेपी आंदोलन में भाग लेने के लिए 1974 में विधान सभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने 1975-77 के आपातकाल के दौरान भी अज्ञात स्थानों से नेतृत्व करके इस जन आंदोलन को जीवित रखा। वह 30 जनवरी 1977 को पटना के गांधी मैदान में विशाल जन सभा के समक्ष मंच पर उपस्थित हुए और उन्हें वहीं से गिरफ्तार कर लिया गया। सभी लोकतांत्रिक अधिकारों को बहाल करने के लिए किए गए निरंतर निडर और निस्वार्थ जन आंदोलन के बाद आपातकाल को वापस लिया गया और चुनाव कराए गए।

6. श्री ठाकुर के नेतृत्व में, चुनाव में गठबंधन की जीत के बाद वह 24 जून 1977 को फिर से बिहार के मुख्यमंत्री बने। उन्होंने गरीबी-निरक्षरता के दुष्चक्र को तोड़ने के लिए दसवीं कक्षा तक शिक्षा को निःशुल्क कर दिया। उन्होंने आबादी के एक बड़े हिस्से की भाषा उर्दू को भी दूसरी राजभाषा बनाया। उन्होंने सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से मुफ्त खाद्यान्न प्रदान करने के लिए पहली बार अंत्योदय योजना लागू की। उन्होंने पिछड़ी जातियों, अत्यंत पिछड़ी जातियों, महिलाओं और उच्च जातियों के गरीबों के लिए शैक्षिक संस्थानों और सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी लागू किया।

7. हालांकि, श्री ठाकुर को सामंतवादी प्रणाली के विशेषाधिकार और सुविधाप्राप्त लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा, किंतु वह सामाजिक न्याय के पथ पर डटे रहे। उनका जीवन ऐसे समाज को विकास पथ पर आगे बढ़ाने की संघर्ष गाथा है, जहां सभी को अपनी क्षमता साकार करने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का समान अवसर मिले।

8. श्री कर्पूरी ठाकुर का 17 फरवरी, 1988 को निधन हो गया।



## Shri Karpoori Thakur (Posthumous)

Shri Karpoori Thakur was a freedom fighter, a visionary statesman and a champion of the cause of farmers, women and disadvantaged sections of society. People call him 'Jannayak' for his work for the cause of common people. His life is a testament to the relentless pursuit of deepening democracy, embodying the principles of liberty, equality and fraternity enshrined in the Constitution of India.

2. Born on 24 January 1924 at Pitaunjhia (now Karpoori Gram) in Darbhanga (Samastipur) district of Bihar in a socially, educationally and politically disadvantaged family in a caste-ridden society of foreign-ruled India. Shri Thakur insisted on attending school. He acquired knowledge from textbooks by listening to lessons meant for the privileged children of Zamindars, all the while perched at the footsteps outside the grand expanse of their Haveli. He was among a few at that time who passed Class 10<sup>th</sup> Board examination. Undeterred by the social and economic challenges, he enrolled in the prestigious CM College. After completing intermediate, he continued his studies for graduation.

3. Shri Thakur, inspired by the freedom struggle, formed the Navyuvak Sangh at the age of 14 and took part in the farmers' movement led by Swami Sahajanand Saraswati. He actively participated in the Quit India Movement and was arrested in 1943. He continued a non-violent struggle against the British Raj and for the landless farmers even after his release from jail in 1945. He was elected provincial minister of the Socialist Party, formed under the leadership of Acharya Narendra Dev and Jayaprakash Narayan in 1948, and also became a member of the Central Committee of Hind Kisan Panchayat. He won the first election of Independent India in 1952 as a Socialist Party nominee. Continuing to represent Tajpur in the assembly after winning the 1957 and 1962 elections, he raised his voice against the plight of the landless peasants and denounced the continuing caste-based oppression of scheduled castes, scheduled tribes and backward castes in the Bihar assembly. He became the Deputy Chief Minister of Bihar in 1967 holding the Education and Finance Ministries. He made primary education free to help the poor and removed the mandatory requirement of passing English to pass the 10<sup>th</sup> Examination to make education inclusive and more relevant. He exempted land rent on land holdings up to 7 acres.

4. Assuming office as the Chief Minister of Bihar on 22<sup>nd</sup> December 1970, Shri Thakur implemented several significant reforms aimed at enhanced accessibility to governance and improving welfare of the populace. He made Hindi as the language of the government and instituted old age pension. With an aim to promote transparency, he overhauled the appointment process of engineers and doctors, distributing their appointment letters in public. His commitment to social justice was further evidenced by his initiation of land reforms. He waived the revenue obligations of the small scale farmers and abolished surcharges on land.

5. Shri Thakur continued winning all elections to represent in the Legislative Assembly. However, he resigned as a Member of the Legislative Assembly in 1974 to participate in the mass movement popularly known as the JP movement after the name of Jayaprakash Narayan. He kept the mass movement alive by leading it from undisclosed places, even during the emergency period of 1975-77. He appeared on a public stage on 30 January 1977 and was arrested before a mammoth gathering of people in Patna's Gandhi Maidan. The continued fearless and selfless mass movement to restore all democratic rights later led to the withdrawal of the emergency and the holding of an election.

6. Shri Thakur again became the Chief Minister of Bihar on 24<sup>th</sup> June 1977, after leading the coalition to victory in the election and made education free till the 10<sup>th</sup> class to break the vicious cycle of poverty- illiteracy. He also recognized Urdu, a language of a large segment of the population, as the second official language. He implemented the Antyodaya Yojana for the first time to provide free food grains through the public distribution system. He also implemented reservation in educational institutions and government jobs for backward castes, extremely backward castes, women, and poor upper castes.

7. Shri Thakur, however, had to face the opposition from the privileged and beneficiaries of the feudal structure but he remained steadfast in his pursuit of social justice. His life has been a story of the struggle to steer society on the just course of development path where everyone gets an equal opportunity to realize his potential and contribute to nation-building.

8. Shri Karpoori Thakur passed away on 17<sup>th</sup> February, 1988.

